B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – School Mangagement and Leadership
Course – 11(E) /Unit – 1(a)
Topic – **विद्यालय-संगठन के सिद्धांत**
(Principles of School-Organisation)

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Lecture No. - 82

Continued from previous lecture....

विद्यालय के कार्य के अधिक गतिशील एवं शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सम्प्रति, विद्यालय-संगठन के लिए निम्नांकित सिद्धांतो को अपनाया जा रहा है-

1. **विद्यालय-संगठन की एकतांत्रिक पद्धति** - यह एक प्राचीन पद्धति है जिसमें विद्यालयो का संगठन अधिकारवादी एकतांत्रिक पद्धति के अनुसार होता था। इसके अनुसार विद्यालय की सत्ता (अतिरिक्त प्रबंध के विषय में) प्रधानाध्यापक के हाथों में रहती है। यह विद्यालय का सबसे बड़ा कार्यपालक होता है। उसके सहायक शिक्षक उसके अधीनस्थ आज्ञाकारी कार्यकर्त्ता के रूप में रहते हैं। शिक्षक के नीचे छात्रों का समूह है, जो प्रधानाध्यापक तथा शिक्षकों से अधीनस्थ जैसा समझा जाता है। इस पद्धति में विद्यालय-समुदाय के सदस्यों, प्रधानाध्यापक, शिक्षक और छात्रों का पारस्परिक संबंध यांत्रिक होता है। आज्ञा प्राप्त करना एवं उसके अनुसार कार्य करना शिक्षकों एवं छात्रों का कार्य होता है। उनके बाच किसी प्रकार का आत्मीय संबंध विकसित नहीं होती। विद्यालय-संगठन की यह पद्धति आज के युग के सामाजिक आदर्शों से मेल नहीं खाती।

2. **विद्यालय संगठन की जनतांत्रिक या प्रजातांत्रिक पद्धति** - इस पद्धति में विद्यालय-समुदाय के सभी सदस्य जनतांत्रिक पद्धति पर सहयोगी सदस्य के रूप में संगठित रहते हैं। विद्यालय के सभी निर्णय शिक्षको एवं छात्रों के परामर्श से लिए जाते हैं, विद्यालय के सभी कार्य ऐसे ही

परामर्शों से ही संचालित होते हैं। प्रधानाध्यापक केवल प्रमुख कार्यपालक ही नहीं रहता, बल्कि वह विद्यालय-परिवार का मुखिया भी होता है। वह सभी की राय से कोई कार्य करता है। ऐसी व्यवस्था में शिक्षक प्रधानाध्यापक का अधीनस्थ कर्मचारी नहीं रहता, बल्कि वह उसका सहकर्मी होता है। वह अपना पूर्ण सहयोग प्रधानाध्यापक को देता है। छात्र भी अपनी योग्यता एवं सामर्थ्य के अनुसार शिक्षकों के निर्णयों तथा कार्य-संपादन में साथ देते हैं। विद्यालय के समस्त वातावरण में आत्मीयता की भावना व्याप्त रहती है। सभी स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को प्रकट करते हैं एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मिलजुल कर कार्य संपादित करते हैं।

To be continued....